शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

विज्ञान युग में संकीर्ण राष्ट्रवाद कालबाह्य

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

बीसवीं सदी के महान संत विनोबा भावे भारत की प्राचीन ऋषि परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में भारत की गौरवशाली आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि का विकसनशील रूप दिखायी देता है। ब्रह्मविद्या का अखंड चिंतन और विज्ञान के साथ उसका समन्वय करना भारत की दुनिया को मौलिक देन है। अपनी चिंतन प्रक्रिया के बारे में विनोबाजी लिखते हैं कि विश्व-प्रेरणाएं अव्यक्त हुआ करती हैं और उनका ध्यान तथा भान उन्हीं को होता है, जो व्यक्त से परे चिंतन कर सकते हैं। अपनी बुद्धि, इंद्रियां, मन, शरीर और बाह्य परिस्थिति से दूर जाने वाले को ही मालूम हो सकता है कि दुनिया में विचार प्रवाह कैसे चल रहा है। ये अव्यक्त प्रवाह जिस तरह काम कर रहे हैं, उस पर मैं बरसों से 'ध्यान, धारणा, समाधि' करता आया हूं। विज्ञान युग में आज दुनिया का जो भयंकर रूप प्रकट हो रहा है, वह आने वाले कल्याणकारी युग की प्रस्तावना है। विज्ञान युग के ये प्रवाह संकुचित राष्ट्रीयता आदि सारे संकुचित विचारों के सर्वथा विरुद्ध हैं। विज्ञान और अध्यात्म अलग-अलग न होकर एक ही हैं। विज्ञान और अध्यात्म को एक हुए बिना गति नहीं है। सारे विश्व की मुक्ति का यही एक मार्ग है। आज हमारे मन पर विज्ञान और अध्यात्म दोनों प्रहार कर रहे हैं। आज जमाना विज्ञान का आया है और विज्ञान जोरदार है। आज मानव ने आसमान में नये उपग्रह फेंके हैं। यह पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूम रहे हैं। इसलिए इसके आगे हमारा काम केवल अंतर्राष्ट्रीय चिंतन से नहीं चलेगा। अब तो अंतर्गोलीय चिंतन की जरूरत पड़ेगी। इसलिए अंतर्जागतिक चिंतन की जरूरत पड़ेगी। मनुष्य को पृथ्वीभर को अपना क्षेत्र मानने से संतोष नहीं हो रहा है। वह दूसरे ग्रहों पर भी जाना चाहता है और उसके साथ संपर्क रखने की दृष्टि रखता है। आज विज्ञान मनुष्य से कह रहा है कि मन की भूमिका नहीं चलेगी। छोटे-छोटे अभिमान नहीं चलेंगे। विज्ञान के जमाने में वही समाज टिकेगा जो अपने को दुनिया का अंग मानेगा। अब राज्यों, पंथों, पक्षों या धर्मों की सीमाएं नहीं टिक सकतीं। अगर कोई कहेगा कि मैं अपना छोटा-सा देश बनाना चाहता हूं, तो वह देश टिकेगा नहीं। अब पृथ्वी से दूर का चंद्रमा भी पृथ्वी के साथ जुड़ रहा है। इसलिए इस जमाने में मनुष्य-मनुष्य के बीच संशय पैदा करने वाली राजनीति टिकने वाली नहीं है। राजनीति और धर्मपंथ मिट जायेंगे। अगर फूट और भेद बढ़ाने वाली राजनीति बढ़ेगी तो इंसान का खात्मा होने वाला है। जो राजनीतिक पार्टियों के बड़े-बड़े नेता हैं, वे ऐसे गिरने वाले हैं, जैसे पतझड़। राष्ट्रवाद में मनुष्य को जोड़ने की शक्ति नहीं रह गयी है। इससे आज अविश्वास पैदा हो रहा है। विज्ञान के प्रकाश में धर्मपंथ और पक्षनिष्ठ राजनीति समाप्त होने वाली है। हमें अपने मन को विज्ञान के अनुकूल बनाने की जरूरत है। मन की मुक्ति के बिना राष्ट्र की मुक्ति का कोई अर्थ नहीं है। पुराना मन रखने से बड़ी भारी हानि होगी। अहिंसा के साथ विज्ञान का विवाह होने पर दुनिया का जीवन मंगलमय होगा अन्यथा इंसान और इंसानियत दोनों मिटने वाले हैं। विज्ञान को अहिंसा, प्रेम और मानवता की दिशा में ले जायेंगे तो विज्ञान से कल्याण होगा अन्यथा विज्ञान से हम भस्मासुर की तरह भस्म हो जाएंगे। भारत का अनुभव अहिंसा का है। इसलिए यह अहिंसा का अनुभव और वैज्ञानिक जमाने का पुरुषार्थ दोनों लेकर हम काम करेंगे तभी भारत दुनिया में टिकेगा।